कबाड़-मुक्त पर्यटन

दिनों दिन कचरे की समस्या बढ़ती जा रही है। इसका सबूत हम सबने इस बरसात में देखा ही है! लेकिन इसके लिए जो औपचारिक समाधान हैं, वो ना सिर्फ कमजोर हैं, बल्कि उनसे समस्या बढ़ रही है। अभी भी वक्त है उससे निपटने का। जिन लोगों का काम–धन्धा उदयपुर की सुन्दरता पर टिका हुआ है, उन सबको इस पर सोचना चाहिए, क्योंकि बढ़ते हुए कचरे के कारण पर्यटक कम आएँगे। अगर हम उदयपुर को एक कचरा–मुक्त शहर बनाएँगे, तो उदयपुर और अधिक मशहूर होगा और लोग आकर्षित होंगे। तो ...

आइए! उदयपुर को एक कचरा–मुक्त शहर बनाएँ।
कबाड़–मुक्ति केवल कचरे के बारे में नहीं है, बल्कि यह भी है कि हम लोगों को क्या खिला रहे हैं? कैसे पानी और उर्जा को बचा रहे हैं? कैसे संस्कृति को प्रस्तुत कर रहे हैं? हमारे शहर के स्वास्थ्य का कैसे ध्यान रख रहे हैं?

उदयपुर में एक अलग तरह का पर्यटन बनाने में पहल करने के लिए आप आमन्त्रित हैं।
सम्पर्क करें :– विशाल सिंह व शिल्पा जैन, शिक्षान्तर, 21 फतेहपुरा फोन : 2451303

आप क्या कर सकते हैं :–

– अपने होटल, रेस्टोरेंट या दुकान में कचरे की छँटाई तीन भागों में करिये जैसे :–
1 प्राकृतिक कचरा (organic) – पत्ते, सब्जियों–फलों के छिलके, बासी खाना ...।
2 पुनःउपयोगी कचरा (recyclable) – कॉच, लोहा, कागज, गत्ता, आदि।
3 हानिकारक कचरा (toxic) – बैट्री, पोलीथीन, ट्यूबलाइट, बल्ब, केमिकल्स आदि।
– प्राकृतिक कचरे का खाद बनाना या जानवरों को खिलाना।
– पुनः उपयोगी कचरे को कबाड़ी को बेचना या उससे जुगाड़ करना।
– हानिकारक कचरा पैदा करने वाली कम्पनियों पर प्रश्न उठाएँ। हमारे साथ अभियान शुरू करें, ताकि कचरे को ठिकाने लगाने के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहरा सकें।
– प्लास्टिक थैलियों व बोतलों के उपयोगों पर पूर्ण रूप से मनाही।
– पाउच संस्कृति को बन्द करें और 'भोगो–फैंको' (use and throw) मानसिकता को बदलें। ऐसी चीजें खरीदें और बेचें, जो टिकाऊ हो।
– अपनी जगह के आस पास कचरे को जलाने, गाड़ने या फैलाने का विरोध करें।
– बिजली की खपत कम करें।
– वर्षा जल संग्रहण करें।
– अपने मोहल्ले में कबाड़ से जुगाड़ की कार्यशालाएँ आयोजित करें।
– प्राकृतिक विकल्प वाले धन्धों को प्रोत्साहित करें (कागज–कपड़े की थैलियॉ, कॉच और ताम्बे की बोतलें, हर्बल साबुन इत्यादि)।